ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-6* Issue-2* March- 2021
Innovation The Research Concept

घरेलू महिलाओं एवं कामकाजी महिलाओं (अध्यापिकाओं) के बच्चों में लिंगभेद के आधार पर सृजनात्मकता का अध्ययन

A Study of Creativity in Children of House Wives vs Working Women (Teachers) Based on Gender Inequalily

Paper Submission: 03/03/2021, Date of Acceptance: 24/03/2021, Date of Publication: 25/03/2021

गीता श्रीवास्तव
सहायक प्राध्यापक,
बी0एड0 विभाग,
डी0 एस0 एन0 (पी0जी0)
कालेज, उन्नाव,
उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

सृजनात्मकता व्यक्तित्व का ऐसा शीलगुण है जो प्रत्येक व्यक्ति में कम या अधिक मात्रा में अवश्य पाया जाता है। प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य घरेलू एवं कामकाजी महिला (अध्यापिका) के बच्चों में लिंग भेद के आधार पर सृजनात्मकता का अध्ययन करना है। प्रस्तुत अध्ययन कार्य के उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए कानपुर महानगर के विद्यालयों से 100 बच्चों को चुना गया, जिसमें 50 बच्चों की माताएं गृहणी है तथा 50 बच्चों की मां का अध्यापन कार्य करती हैं। परिणामों के आधार पर यह निष्कर्ष निकला कि बच्चों की सृजनात्मकता में लिंग भेद के आधार पर कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया है। छात्रों की सृजनात्मक क्षमता को विकसित करने के लिए पाठ्यक्रम में रचनात्मक विषयों को स्थान दिया जाए तथा विद्यालय में पाठ्य सहगामी क्रियाओं का आयोजन किया जाए।

Creativity is a quality of personality which is found more or less in every individual. The main objective of the present study is to compare the creativity of the children of house wives and teachers and see the effects genetically in the center of the creativity among the children of house wives and teacher. Far these purpose 100 students of District Kanpur were selected. The mothers of 50 children were only house wives and other 50 were doing teaching work. On the basis of the result obtained, there was insignificant difference in the creativity among the children of house wives and teachers. Boys obtained higher creativity marks than Girls. Co-curricular activities and programmes should be organised to encaurage students for various creative activities.

मुख्य शब्द : सृजनात्मकता, शिक्षक, बच्चों, महिलाओं, अध्यापिकाओं।
Creativity, Teachers, Children, Women, Teachers.

प्रस्तावना

वर्तमान सामाजिक संदर्भ (21वीं सदी) की सबसे बड़ी उपलब्धि देखी जाये तो वह महिलाओं का कार्यशील होना है। वर्तमान युग में महिलाओं को न केवल पारिवारिक अपितु सामाजिक, आर्थिक दायित्वों का भी निर्वाह करना पड़ता है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में महिलायें कार्यरत हैं, परन्तु कुछ क्षेत्र ऐसे भी हैं जिनमें महिलाओं की संख्या का एक बहुत बड़ा वर्ग कार्यरत है, उनमें से एक प्रमुख क्षेत्र शिक्षण का भी है।

शिक्षण क्षेत्र में महिलाओं के अधिक संख्या में कार्यरत होने का एक प्रमुख कारण महिलाओं की प्रकृति में कोमलता है। इसके अतिरिक्त शिक्षण के क्षेत्र को समाज में अत्यधिक सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है। बच्चों की प्रारम्भिक शिक्षा में जितनी अधिक आवश्यकता महिला शिक्षिकाओं की होती है उतनी पुरूष शिक्षकों की नहीं। बच्चे की प्रथम शिक्षिका उसकी माँ ही होती है, बच्चे के प्रारम्भिक विकास पर उसकी माँ का ही प्रभाव सर्वाधिक पड़ता है।

कार्यशील महिलायें 7–8 घण्टे घर से बाहर रहती हैं जिसका प्रभाव किसी न किसी रूप में उनके परिवार पर पड़ता है और सबसे अधिक उनके

बच्चे प्रभावित होते हैं। महिलाओं के नौकरी करने का प्रभाव उनके बच्चों द्वारा सकारात्मक अथवा नकारात्मक अभिवृत्ति के रूप में प्रदर्शित किया जाता है। बच्चों की सकारात्मक अभिवृत्ति उनके व्यवहार से पता चल जाती है। सकारात्मक अभिवृत्ति में स्वावलम्बन, एक–दूसरे को समझने की शक्ति तथा उन्मुक्त विचार पाये जाते हैं, जबकि नकारात्मक अभिवृत्ति जागृत होने पर उनमें अन्तर्द्वन्द, अनुशासनहीनता, दुश्चिन्ता तथा असुरक्षा की भावना पैदा हो जाती है। यह कभी–कभी गलत आदतों, भ्रमों और कष्टों को जन्म देती है, और बालक स्वयं को एकांकी अनुभव करने लगता है। सृजनात्मकता किसी वस्तु, विचार, कला, साहित्य से सम्बद्ध किसी समस्या का समाधान निकालने आदि के क्षेत्र में कुछ नया रचने, अविकृत करने या पुनः सृजित करने की प्रक्रिया है।

सृजनात्मकता विभिन्न स्थितियों के साथ नवीन सम्बन्ध स्थापित करना अथवा स्थिति विशेष के प्रति नवीन दृष्टिकोण की अभिव्यक्ति है। इस प्रकार सृजनात्मकता चिन्तन शैली में, अध्ययन में, किसी कार्य में, खेल–कूद में, सामाजिक अन्तःक्रिया में सम्भव है। सभी कार्य जो हम करते हैं, स्थिति विशेष में चल रहे पुराने सम्बन्धों को नवीन व्यवस्था और रूप प्रदान कर सकते हैं। हमारे अध्ययन में घटनाओं के स्मरण करने में भी सृजनात्मकता निहित है। जब हम किसी समस्या का समाधान ढूँढ़ते हैं, सृजनशील रहते हैं। वास्तव में बिना सृजनात्मक दृष्टिकोण रखे समस्या का समाधान नहीं हो सकता है। अतः जब पुराने नियम, आदतें, कार्य प्रणाली उपयोगी सिद्ध नहीं होती हैं, तब हमें नया ढंग या मार्ग अपनाना पड़ता है, इसी में सृजनात्मकता निहित है।

इस प्रकार सृजनात्मकता किसी न किसी रूप में उत्पादन या नवीन रचना से सम्बन्धित है। यह उत्पादन मूर्त या अमूर्त किसी भी रूप में हो सकता है। विज्ञान, कला, तकनीकी आदि के क्षेत्र में सृजनात्मक उत्पादन का रूप मूर्त होता है, जबकि साहित्यिक रचनाओं आदि के क्षेत्र में इसका रूप अमूर्त होता है।

अध्ययन की आवश्यकता

नवीन शिक्षा प्रणाली में शिक्षा के सिद्धान्तों में सृजनात्मकता के सिद्धान्तों को जानने का प्रयास किया जा रहा है। सृजनात्मकता व्यक्तित्व का ऐसा शील गुण है जो प्रत्येक व्यक्ति में न्यूनाधिक मात्रा में पाया जाता है। इसकी मात्रा में भी व्यक्तिगत भिन्नता पाई जाती है। प्रत्येक बालक शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक, सामाजिक एवं व्यवहारात्मक रूप से दूसरे बालक से भिन्न होता है। यहॉ तक कि एक ही माता–पिता की दो जुड़वां संतानें हैं जो समान वंशानुक्रमीय गुणों को लेकर जन्म लेती हैं, परस्पर काफी भिन्न होती हैं। वंशानुक्रम से शारीरिक व मानसिक गुण जैसे बुद्धि, सुजनात्मकता आदि वे माता–पिता द्वारा हस्तान्तरित होते हैं, उनका विकास उचित वातावरण मिलने पर ही सम्भव है। माता के व्यक्तित्व का प्रभाव बच्चे पर न केवल जन्म से पूर्व अपितु जन्म के बाद भी पड़ता है, क्योंकि प्रारम्भिक अवस्था में वह माता के सम्पर्क में अधिक रहता है, तथा प्रत्येक कार्य के लिए माता पर निर्भर रहता है। माता जो भी कार्य करती हैं वह उन कार्यो का अनुकरण करने का प्रयास करता है। अतः स्पष्ट है कि माता की रचनात्मक प्रवृत्ति का प्रभाव भी बालक पर अवश्य पड़ता होगा। आधुनिक युग में महिलाओं का जीवन इतना व्यस्त हो गया है कि वे अपना पूरा समय परिवार के साथ नहीं बिना पाती हैं, क्योंकि आर्थिक दायित्वों का भार उनके कन्धों पर भी होता है। ऐसी स्थिति में उनका पारिवारिक जीवन किसी न किसी रूप में प्रभावित होता है।

अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य हैं :–

1. घरेलू महिलाओं एवं अध्यापिकाओं के बच्चों में सृजनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. घरेलू महिलाओं के बच्चों में सृजनात्मकता पर लिंग भेद के प्रभाव का अध्ययन करना।
3. अध्यापिकाओं के बच्चों में सृजनात्मकता पर लिंग भेद के प्रभाव का अध्ययन करना।

परिकल्पना

प्रस्तुत अध्ययन में किसी पूर्व निष्कर्ष पर केन्द्रित न रह कर परिकल्पनाओं का चयन शून्य परिकल्पना के आधार पर किया गया है। मुख्य परिकल्पनायें निम्नलिखित हैं :–

1. घरेलू महिलाओं और अध्यापिकाओं के बच्चों की सृजनात्मकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. घरेलू महिलाओं के बच्चों की सृजनात्मकता में लिंग भेद की दृष्टि से कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. अध्यापिकाओं के बच्चों की सृजनात्मकता में लिंग भेद की दृष्टि से कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

अध्ययन क्षेत्र

प्रस्तुत अध्ययन कार्य का क्षेत्र कानपुर महानगर है।

अध्ययन का स्वरूप

प्रस्तुत अध्ययन कार्य में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श तथा न्यादर्शन

प्रस्तुत अध्ययन कार्य के उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुये कानपुर महानगर के विद्यालयों का चयन किया गया, तथा इन विद्यालयों में केवल उन्हीं बच्चों का अध्ययन किया गया जिनकी मातायें किसी विद्यालय में अध्यापन कार्य करती हों एवं उन बच्चों का भी चयन किया गया जिनकी माता किसी भी प्रकार का बाहरी कार्य न करती हों अर्थात केवल गृहणी हों। इस प्रकार कुल 100 बच्चों का चयन अप्रसम्भाव्यता विधि से किया गया।

अध्ययन के उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन कार्य में वकार मेंहदी द्वारा सृजनात्मकता की माप के बनाये गये अशाव्दिक परीक्षण का प्रयोग किया गया है। सृजनात्मकता चिंतन के अशाब्दिक परीक्षण में तीन उप परीक्षण हैं जो निम्न हैं :–

चित्र बनाने की क्रियायें

इस परीक्षण में दो साधारण रेखीय आकृति की जाती है। प्रत्येक आकृति को अंग मानकर परीक्षार्थी को ऐसा चित्र बनाना होता है जिसे अन्य कोई सोंच न सके।

प्रत्येक चित्र के लिए पाँच–पाँच मिनट का अलग–अलग समय निर्धारित किया जाता है।

चित्रपूति क्रियायें

इस परीक्षा में 10 आपूर्ति आकृतियाँ दी गई हैं। परीक्षार्थी को प्रत्येक आकृति को रेखाओं की सहायता से पूरा करना होता है। चित्र का रोचक शीर्षक भी देना होता है। समस्त कार्यो के लिए 15 मिनट का समय निर्धारित किया जाता है।

त्रिभुजाकार एवं अण्डाकार आकृति क्रियायें

इस परीक्षण में सात त्रिभुजाकार और सात अण्डाकार आकृतियॉ दी गई हैं। प्रत्येक आकृति को अंग मानकर नवीन एवं रोचक चित्र बनाना होता है। इसके लिए 10 मिनट का समय निर्धारित है। सम्पूर्ण परीक्षा के लिए 35 मिनट का समय दिया जाता है। परीक्षण पर की गई अनुक्रियाओं को फलांकन शीट पर विस्तरम्, मौलिकता तथा योग सृजनात्मक प्राप्तांकों के रूप में ज्ञात किया जाता है।

सांख्यिकीय विश्लेषण

प्राप्त तथ्यों के वर्गीकरण एवं विश्लेषण के लिए दोनो समूहों का अध्ययन, प्रमाणिक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात (t) का मान ज्ञात किया गया।

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

घरेलू महिलाओं एवं अध्यापिकाओं के बच्चों की सृजनात्मकता के मध्य में अन्तर को निम्नांकित तालिका के द्वारा स्पष्ट किया गया है :–

तलिका संख्या–1

क0सं0	वर्ग	छात्रों की संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
1.	घरेलू महिलाओं के बच्चे	50	106.0	11–95		.05 स्तर पर सार्थक
2.	अध्यापिकाओं के बच्चे	50	106.5	11–70	.215	अन्तर नहीं है

उपरोक्त तालिका घरेलू महिलाओं एवं अध्यापिकाओं के बच्चों की सृजनात्मकता स्तर के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन तथा मध्यमानों के मध्य अन्तर से प्राप्त क्रान्तिक अनुपात के मान को प्रदर्शित करती है। इस प्रकार इस अध्ययन की परिकल्पना संख्या–1 सही प्रतीत होती है कि घरेलू महिलाओं और अध्यापिकाओं के बच्चों की सृजनात्मकता के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तलिका संख्या–2

घरेलू महिलाओं के बच्चों की सृजनात्मकता में लिंग भेद की दृष्टि से कोई सार्थक अन्तर नहीं हैं इसे निम्नांकित तालिका के द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है।

क0सं0	घरेलू महिलाओं के बच्चे	छात्रों की संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
1.	बालक	25	160.5	12–70		.05 स्तर पर सार्थक
2.	बालिकायें	25	105.2	11–10	.473	अन्तर नहीं है

उपरोक्त तालिका का अवलोकन करने से स्पष्ट होता है कि घरेलू महिलाओं के बालकों का मध्यमान 106. 5 तथा प्रमाणिक विचलन 12–70 है, तथा बालिकाओं का मध्यमान 105.2 तथा प्रमाणिक विचलन 11–10 है। दोनों समूहों के मध्य प्राप्त क्रान्तिक अनुपात –473 है। यह मान .05 सार्थकता स्तर पर सार्थक नहीं पाया गया।

उपरोक्त परिणामों के आधार पर घरेलू महिलाओं के बच्चों की सृजनात्मकता में लिंग भेद की दृष्टि से अन्तर नहीं पाया गया। इस प्रकार इस अध्ययन की परिकल्पना संख्या–2 सही प्रतीत होती है।

तलिका संख्या–3

अध्यापिकाओं के बच्चों की सृजनात्मकता में लिंग भेद के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नहीं प्राप्त हुआ है जो कि निम्नांकित तालिका के द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है।

क0सं0	अध्यापिकाओं के बच्चे	छात्रों की संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
1.	बालक	25	108.6	12–45		.05 स्तर पर सार्थक
2.	बालिकायें	25	107.4	10–50	.145	अन्तर नहीं है

उपरोक्त तालिका का अवलोकन करने से स्पष्ट होता है कि अध्यापिकाओं के बालकों का मध्यमान 108.6 प्रमाणिक विचलन 12–45 तथा बालिकाओं का मध्यमान 104.4 तथा प्रमाणिक विचलन 10–50 है। दोनो समूहों के मध्य क्रान्तिक अनुपात मूल्य .142 है। यह मान .05 सार्थकता स्तर पर सार्थक नहीं पाया गया।

उपरोक्त परिणामों के आधार पर अध्यापिकाओं के बच्चों की सृजनात्मकता में लिंग भेद के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। अतः परिकल्पना संख्या–3 सार्थक प्रतीत होती है।

उपरोक्त दोनो ही परिणाम जो कि सृजनात्मकता में लिंग भेद के दृष्टिकोण को स्पष्ट करते हैं, के आधार पर कहा जा सकता है कि बालकों एवं बालिकाओं की सृजनात्मकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। यदि मध्यमानों के आधार पर तुलना की जाए तो यह स्पष्ट हो जाता है कि बालकों ने बालिकाओं की अपेक्षा उच्च सृजनात्मकता अंक प्राप्त किये हैं। इसका कारण यह हो

सकता है कि बालिकाओं की अपेक्षा बालकों को अधिक स्वतन्त्रता मिलती है।

अतः उन्हें नवीन अनुभव, जीवन के विभिन्न क्षेत्रों से परिचय का तथा वाह्य वातावरण से सम्पर्क के अधिक अवसर प्राप्त होते हैं जो उनकी सृजनात्मक क्षमता को बढ़ाने में उपयुक्त सिद्ध होते हैं।

अध्ययन का परिणाम

अध्ययन से प्राप्त परिणामों को देखने से यह ज्ञात हुआ कि :–

1. घरेलू महिलाओं और अध्यापिकाओं के बच्चों की सृजनात्मकता के मध्य अन्तर नहीं पाया गया।
2. घरेलू महिलाओं के बच्चों की सृजनात्मकता में लिंग भेद की दृष्टि से अन्तर नहीं पाया गया।
3. अध्यापिकाओं के बच्चों की सृजनात्मकता में लिंग भेद की दृष्टि से अन्तर नहीं पाया गया।

निष्कर्ष

प्राप्त निष्कर्षो से ज्ञात होता है कि घरेलू महिलाओं एवं अध्यापिकाओं के बच्चों की सृजनात्मकता में सार्थक अन्तर नहीं है।

शैक्षिक सुझाव

शिक्षा का कार्य बालकों को सृजनशील बनाना, उन्हें रचनात्मक ढंग से सोचने के लिए प्रेरित करना तथा अपनी रूचि के क्षेत्र में नवीनता लाने के लिए उन्हें तैयार करना आदि है। इसके लिए वही शिक्षा समर्थ हो सकती है, जो अपने में स्वयं सृजनात्मक हो जिससे शिक्षक तथा शिक्षार्थी रचनात्मक क्रिया में प्रवृत्त होकर जीवन में नया दृष्टिकोण पैदा कर सके। प्रस्तुत अध्ययन इसी क्षेत्र में एक प्रयास है। इस शोध अध्ययन के शैक्षिक महत्व को निम्नलिखित ढंग से स्पष्ट किया जा सकता है।

1. छात्रों में सृजनात्मक क्षमता को प्रोत्साहित करने के लिए पाठ्यक्रम में सृजनात्मक विषयों को स्थान दिया जाये तथा विद्यालय में पाठ्य सहगामी क्रियाओं के आयोजन के द्वारा उन्हें विभिन्न सृजनात्मक कार्यो के लिए प्रोत्साहित किया जाये।
2. छात्रों में छिपी सृजनात्मक क्षमता का पता लगाया जाये तथा उन्हें नवीन रचनाओं के सृजन के लिये प्रेरित किया जाये।
3. सामान्य कक्षाओं में ही सृजनात्मकता के लिये विद्यार्थियों की विशेष शिक्षा की व्यवस्था की जाये।
4. शिक्षा विधियों में परिवर्तन एवं परिमार्जन करके भी सृजनात्मकता को बढ़ाया जा सकता है।
5. सृजनात्मक शक्ति के विकास हेतु उचित अवसर व सुविधायें उपलब्ध कराकर हम विद्यार्थियों को उन्नति के पथ पर अग्रसर कर सकते हैं तथा शिक्षा के सभी उद्देश्यों की प्राप्ति कर सकते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *सारस्वत, मालती (1990) शिक्षा मनोविज्ञान, आलोक प्रकाशन, 110 विवेकानन्द मार्ग, इलाहाबाद।*
2. *कपिल एच0के0 अनुसंधान विधियॉ, आगरा, हर प्रसाद भार्गव पुस्तक प्रकाशन।*
3. *कपिल एच0के0 सांख्यिकी के मूल तत्व, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।*
4. *Mehndi, Baguar (1985) Mannual of Non Verbal test of Creative thinking.*
5. *राय पारसनाथ (1983) अनुसंधान परिचय, चावला एण्ड संस, आगरा।*
6. *वर्मा, प्रीती तथा श्रीवास्तव, डी0एम0 (1992) आधुनिक सामान्य मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।*
7. *गूगल*
8. *विभिन्न समाचार पत्र – पत्रिकायें।*